eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

महिला सशक्तिकरण में उच्च शिक्षा की भूमिका

शालू गुप्ता[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर (शिक्षा शास्त्र विभाग) गिन्दो देवी महिला महाविद्यालय (बदायूं) उ0प्र0

Received: 15 April 2025 Accepted & Reviewed: 25 April 2025, Published: 30 April 2025

Abstract

उच्च शिक्षा को डिग्री स्तर की शिक्षा के रूप में परिभाषित किया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें चिकित्सा, इंजीनियरिंग, कानून, संगीत कला के क्षेत्र में व्यावसायिक स्कूल, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान और तकनीकी संस्थान सहित अन्य संस्थान शामिल हैं। महिलाएं केवल साक्षरता के माध्यम से ही सशक्त नहीं हो सकती बल्कि वे उच्च शिक्षा के माध्यम से अधिक सशक्त एवं सक्षम बन सकती हैं। आधुनिक भारत में महिलाएं राष्ट्रपति प्रधानमंत्री मुख्यमंत्री लोकसभा अध्यक्ष जैसे शीर्ष पदों पर आसीन हुई हैं।इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि पिछले कुछ दशकों से उच्च शिक्षा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण में वृद्धि हुई है। भारत विकास के पथ पर अग्रसर हुआ है। वास्तव में उच्च शिक्षा महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।यह केवल उच्च शिक्षा ही है जो उन्हें आवश्यकतानुसार अपने अधिकारों का उपयोग करने में सक्षम बनाती है। उच्च शिक्षा महिलाओं को ज्ञान कौशल और आत्मविश्वास के साथ सशक्त बनाने का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। यह असमानताओं में कमी लाती है और परिवार के भीतर उनकी स्थिति को बेहतर बनाने में मदद करती है।वर्तमान में उच्च शिक्षा का लक्ष्य महिलाओं को व्यवसायिक, तकनीकी और पेशेवर शिक्षा तक पहुंच प्रदान करना है। महिला सशक्तिकरण और उच्च शिक्षा के मार्ग में कई बाधाएं हैं।महिला सशक्तिकरण और उच्च शिक्षा के संबंध में भारत सरकार की नीतियों और विभिन्न कार्यक्रमों का उचित क्रियान्वयन होना चाहिए। प्रस्तुत शोध पत्र में महिलाओं को सशक्त बनाने में उच्च शिक्षा की प्रासंगिकता का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द – उच्च शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, समाज, आवश्यकता, विकास, समानता आदि।

Introduction

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के व्यक्तियों का मौलिक अधिकार है। प्राथमिक माध्यमिक और उच्च शिक्षा सभी श्रेणी के नागरिकों को बिना किसी भेदभाव के प्रदान की जानी चाहिए। साक्षरता शिक्षा का मूल आधार है। जनगणना रिपोर्ट 2011 के अनुसार भारत में साक्षरता दर में व्यापक लैगिंक असमानता थी। '' 2011 में, साक्षरता दर 74.04 फीसदी थी। पुरुषों में 82.14 फीसदी और महिलाओं में 65.46 फीसदी थी।''[1] केवल साक्षरता ही महिलाओं को आत्मनिर्भर नहीं बन सकती लेकिन उच्च शिक्षा महिलाओं को अधिक सक्षम बनाने में मदद करती है। सशक्त महिला का अर्थ केवल यह नहीं है कि वह उच्च शिक्षा के साथ रोजगार युक्त हो बल्कि इसके साथ ही उसे विवेकशील बुद्धिमान और निर्णय लेने में कुशल होना चाहिए। भारत में प्राचीन काल से ही पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं को पुरुषों से कमतर समझा जाता रहा है। शिक्षा, मतदान, सार्वजनिक जीवन में भागीदारी आदि सभी अधिकारों से वंचित रखा गया है। समाज में उनकी स्थिति दोयम दर्जे की थी। ऐसी स्थिति में महिला

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

शिक्षा को महत्व देना एक मृगतृष्णा के समान था। जब एक महिला सशक्त होती है, तो अपनी क्षमता के आधार पर कोई भी निर्णय लेने में सक्षम होती है। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ने सशक्तिकरण को विशेष रूप से अपने जीवन को नियंत्रित करने और अपने अधिकारों का दावा करने के लिए अधिक मजबूत और अधिक आत्मविश्वासी होने के रूप में परिभाषित किया है। शिक्षा हर देश में और उसके मानव संसाधन के विकास के लिए महत्वपूर्ण कारक है। ''महिलाओं का सशक्तिकरण शिक्षा के जरिए स्तर से दृढ़ता से जुड़ा हुआ है यानी शिक्षा का स्तर जितना ऊंचा होगा, महिलाओं का सशक्तिकरण उतना ही अधिक होगा।''[२]

भारतीय संविधान ने अपनी प्रस्तावना, मौलिक अधिकारों, मौलिक कर्तव्य और राज्य की नीतियों के निर्देशक सिद्धांतों में महिलाओं को समानता प्रदान की है। महिलाओं के लिए शिक्षा पर संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार, यह लोगों के स्वास्थ्य और जीवन में प्रभावी रूप से बदलाव ला सकती है और महिलाएं अपने बच्चों को उनके जीवन लक्ष्यों के संबंध में दृढ़ निर्णय लेने में मार्गदर्शन कर सकती है।

उद्देश्य –

1–उच्च शिक्षा के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण का अध्ययन करना।
2–महिला सशक्तिकरण और उच्च शिक्षा के बीच संबंधों का विश्लेषण करना।

शोध पद्धति –यह शोध पत्र मूलतः वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। द्वितीयक स्रोतों का विश्लेषण करते हुए यह शोध पत्र महिलाओं को सशक्त बनाने में उच्च शिक्षा की भूमिका और इसके महत्व को प्रस्तुत करता है।

भारत में उच्च शिक्षा और महिलाओं की स्थिति– भारत में उच्च शिक्षा की जडें बहुत पहले से हैं। 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में तक्षशिला भारत में उच्च शिक्षा का सबसे पुराना केंद्र था। नालंदा विश्वविद्यालय दुनिया की सबसे पुरानी विश्वविद्यालयी शिक्षा प्रणाली थी। भारत में ब्रिटिश राज के समय, पश्चिमी शिक्षा को भारतीय समाज में पेश किया गया। ब्रिटिश काल में महिला शिक्षा और रोजगार को मान्यता दी गई। लेकिन स्वतंत्रता पूर्व – युग में उच्च शिक्षा तक पहुंच बहुत सीमित थी। स्वतंत्रता के बाद राधाकृष्णन आयोग ने कहा ऐसे कॉलेज स्थापित किए जाने चाहिए जो उच्च शिक्षा के लिए पुरुषों और महिलाओं दोनों को तैयार कर सकें। 1958 में महिला शिक्षा के लिए एक समिति की स्थापना की गई। 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति और इसके कार्यान्वयन ने लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण के लिए उच्च शिक्षा को प्राथमिकता दी। वर्तमान में उच्च शिक्षा प्रणाली और महिलाओं की भागीदारी में क्रांतिकारी बदलाव हो रहा है। उच्च शिक्षा का लक्ष्य महिलाओं को व्यवसायिक, तकनीकी, पेशेवर शिक्षा और उभरती हुई प्रौद्योगिकियों तक पहुंच प्रदान करना है। महिलाओं के लिए उपयुक्त कौशल और व्यवसायों की पहचान महिलाओं की रोजगार क्षमता के आधार पर होनी चाहिए। बालिकाओं की शिक्षा न केवल सामाजिक न्याय के आधार पर महत्वपूर्ण है बल्कि इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे सामाजिक परिवर्तन आता है। हमें राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा में लैंगिक समानता को बढ़ावा देना होगा। भारतीय परिवेश में ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं माध्यमिक शिक्षा तो प्राप्त करती

हैं लेकिन उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाती। उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं का प्रतिशत पुरुषों से कम है और कॉर्पोरेट स्तर पर उच्च पदों पर महिलाओं की संख्या बहुत कम है।

अब सरकार का ध्यान महिला शिक्षा पर अधिक है। ''वर्तमान में (14–11–2023 तक)भारत में 56 केंद्रीय विश्वविद्यालय, 479 राज्य विश्वविद्यालय 124 डीम्ड विश्वविद्यालय और 455 राज्य निजी विश्वविद्यालय यूजीसी की विश्वविद्यालयों की समेकित सूची में सूचीबद्ध हैं।''[३] जिनमें से 17 विश्वविद्यालय विशेष रूप से महिलाओं के लिए हैं जिनमें तीन विश्वविद्यालय राजस्थान में, दो तमिलनाडु और कर्नाटक में और एक–एक प्रत्येक राज्य आंध्र प्रदेश, असम, बिहार, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, उत्तराखंड और पश्चिम बंगाल में स्थित हैं।

भारत सरकार ने हर आंदोलन में महिलाओं के लिए विशेष रूप से कई कदम और योजना बनाई हैं। महिलाओं की बेहतरी के लिए कई नीतियां और कार्यक्रम हैं।

1–राष्ट्रीय साक्षरता मिशन का लक्ष्य 2035 तक 41 फीसदी साक्षरता दर प्राप्त करना है।
2–सर्व शिक्षा अभियान 2001 में प्रारंभ किया गया था जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि 6–14 वर्ष तक के सभी बच्चे स्कूल जा सकें।
3–राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (रूसा) का उद्देश्य योग्य राज्य उच्च शिक्षण संस्थानों को धन उपलब्ध कराना है। यह महिलाओं को उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान करता है। भारत सरकार द्वारा महिलाओं की सशक्तिकरण के लिए राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण मिशन (एनएमईडब्लू) शुरू किया गया। इसने महिला लिंग और महिला साक्षरता दोनों के अनुपात में वृद्धि की है।
4–यूजीसी ने सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान के लिए एकल बालिकाओं के लिए स्वामी विवेकानंद छात्रवृत्ति शुरू की है।
5–प्रगति–तकनीकी शिक्षा के लिए बालिकाओं को छात्रवृत्ति का उद्देश्य बालिकाओं को तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहन और सहायता प्रदान करना है।

महिला सशक्तिकरण और उच्च शिक्षा की आवश्यकता–''प्राचीन काल भारतीय महिलाओं का स्वर्णिम काल कहा जा सकता है।पुरुष प्रधान व्यवस्था होने के बावजूद महिलाओं का समाज में सम्मान था, प्रतिष्ठा थी, उन्हें आगे बढ़ाने की पूर्ण स्वतंत्रता थी।''[४] लेकिन सभ्यता के विकास के दौरान महिलाओं ने अपने स्थान की प्रमुखता को खोकर पुरुषों के बाद दोयम दर्जे को स्वीकार कर लिया। हालांकि, महिलाएं कुल आबादी का लगभग 48 फीसदी हिस्सा हैं, लेकिन सामाजिक – सांस्कृतिक भेदभाव के कारण उन्होंने अपना दर्जा खो दिया। वर्तमान में महिलाएं समाज में निर्णय लेने और विकासात्मक प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है लेकिन फिर भी उनकी भागीदारी कम है। चूंकि महिलाएं समाज और देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं, इसीलिए महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। ''उच्च शिक्षा महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, पेशेवर विशेषज्ञता और निर्णय लेने की क्षमताओं को बढ़ाकर उन्हें सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।''[५]

उच्च शिक्षा और महिलाएं –आधुनिक काल के प्रारंभ से ही महिलाओं ने शिक्षा के क्षेत्र में एक नई पहचान बनायी है।आज कई महिलाओं ने स्वयं को वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर, नौकरशाह, राजनीतिक

और सफल व्यवसायी के रूप में स्थापित कर महिला सशक्तिकरण की दिशा में नया आयाम स्थापित किया है। उनके सशक्तिकरण में उच्च शिक्षा का योगदान है जो हमेशा अविभाजित है, जिसके द्वारा राष्ट्र आर्थिक रूप से समृद्ध होता है। उच्च शिक्षा महिलाओं को पारंपरिक और आधुनिक दोनों रूपों में सहायता करती है। उच्च शिक्षा पारंपरिक रूप में महिलाओं को पत्नी और मां की भूमिका कुशलता पूर्वक निभाने में मदद करती है और आधुनिक रूप में उच्च शिक्षा का महत्व इस वैश्विकृत युग में उनके जीवन में पर्याप्त रूप से मजबूत होने के लिए अत्याधिक प्रासंगिक है। इस प्रकार उच्च शिक्षा की आवश्यकता केवल पुरुषों के लिए नहीं बल्कि महिलाओं के लिए भी समान रूप से ही है। इस प्रकार , शिक्षा महिलाओं को सभी प्रकार की पारिवारिक समस्याओं को हल करने और वैयक्तिक पहचान पाने में सक्षम बना सकती है। शिक्षित होने के कारण उनमें समाज में व्याप्त समस्याओं को समझने और उनके खिलाफ लड़ने की क्षमता उत्पन्न होती है।

महिला सशक्तिकरण में उच्च शिक्षा की भूमिका –पंडित जवाहरलाल नेहरू के शब्दों के अनुसार, एक व्यक्ति एक पुरुष को शिक्षित करके शिक्षित होता है लेकिन एक परिवार केवल महिलाओं को शिक्षित करके ही शिक्षित किया जा सकता है। इसीलिए उनके शब्दों में यदि एक महिला सशक्त है तो इसका मतलब है भारत सशक्त है। नेहरू जी के यह शब्द महिला सशक्तिकरण और महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा के बीच संबंध को स्पष्ट करते हैं क्योंकि विश्व में आधी आबादी महिलाओं की है और वे सशक्त होकर सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकती हैं। उच्च शिक्षा महिला सशक्तिकरण के लिए एक मील का पत्थर साबित होती है, जो महिलाओं को उनके पारंपरिक भूमिका से बाहर लाकर कई चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाती है। उच्च शिक्षा तक उनकी बढ़ती पहुंच महिलाओं को उनकी क्षमताओं के माध्यम से लैंगिक असमानताओं की कठोर प्रथाओं से मुक्त करती है। महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा के तहत कई योजनाएं चलाई जा रही हैं। भारत सरकार उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए एकल बालिका के लिए इंदिरा गांधी छात्रवृति जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से बालिकाओं के लिए उच्च शिक्षा को प्रोत्साहित करती है।महिला छात्रावासों का निर्माण और उच्च शिक्षा में महिला प्रबंधकों के लिए क्षमता निर्माण के माध्यम से उच्च शिक्षा का समर्थन करती है उच्च शिक्षा निम्नलिखित गुणों को विकसित करके उनके जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला सकती है।

1–महिलाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि।
2–सामाजिक व्यवस्था में उनकी स्थिति में सुधार
3–महिलाओं को उनकी सामाजिक जिम्मेदारी और अधिकारों के संबंध में जानकारी।
4–रोजगार के अवसर प्रदान करना
5–आत्मबोध में वृद्धि करना
6–लिंग समानता के प्रति जागरूकता बढ़ाना
7–आलोचनात्मक चिंतन का विकास करना
8–स्व निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना
9–उनके नेतृत्व कौशल विकसित करने में सहायता करना।
10–दूसरों पर निर्भरता को कम कर आत्मनिर्भर बनाना।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

वर्तमान परिदृश्य में उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी– लिंग समानता सूचकांक विभिन्न क्षेत्रों में महिला प्रतिनिधित्व का एक मजबूत संकेतक है। उच्च शिक्षा में लिंग समानता सूचकांक जीपीआई उच्च शिक्षा क्षेत्र में महिला प्रतिनिधित्व की सीमा को दर्शाता है। 2015–16 में 0.92 से 2019–20 में 1.01 तक इसमें वृद्धि हुई है जो पुरुषों की तुलना में विशिष्ट आयु वर्ग की महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा तक पहुंच में सुधार का संकेत देता है। (AISHE 2020)

निसंदेह पिछले कुछ वर्षों में उच्च शिक्षा में महिला नामांकन में वृद्धि हुई है। प्राथमिक और उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा में बेहतर गुणवत्ता प्रदान करके अवधारण दर बढ़ाने और सीखने के परिणामों में सुधार करने के अधिक ठोस प्रयासों के साथ, आने वाले वर्षों में भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली में महिलाओं की भागीदारी निश्चित रूप से बढ़ेगी।

हालांकि उच्च शिक्षा में महिलाओं की अधिक भागीदारी निःसंदेह एक सकारात्मक विकास है। AISHE (2020) इस बात पर प्रकाश डालता है कि राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों में महिला छात्रों की भागीदारी सबसे कम है उसके बाद डीम्ड यूनिवर्सिटी–सरकारी और राज्य निजी विश्वविद्यालय हैं। यह सुनिश्चित करना अनिवार्य है कि शिक्षा की गुणवत्ता एक अच्छे मानक की हो। उच्च शिक्षा क्षेत्र में जबरदस्त विस्तार हुआ है।उच्च शिक्षा के क्षेत्र में तेजी से विस्तार के साथ–साथ प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होना चाहिए।

ब्रूकिंग्स इंडिया की 2019 की रिपोर्ट के अनुसार 'भारत में उच्च शिक्षा के पुनरूद्धार ने 2001 से उच्च शिक्षा में तेज वृद्धि देखी है। उच्च शिक्षा संस्थानों (HEI) की संख्या में नाटकीय वृद्धि हुई है और नामांकन में चार गुना वृद्धि हुई है। भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली अब 51,649 संस्थानों के साथ दुनिया की सबसे बड़ी प्रणालियों में से एक है।''[६]

चुनौतियां –''पिछले कुछ वर्षों में उच्च शिक्षा के सामने कई चुनौतियां आई है जैसे अधिक विषयों और विविधता को कैसे शामिल किया जाए।नए विकल्पों की सामाजिक मांग को कैसे पूरा किया जाए और लैंगिक बाधाओं और भूमिका संबंधी रूढ़िवादिता को कैसे दूर किया जाए,''[७]। शिक्षा में लैंगिक असमानता एक ऐसा विषय है जिस पर एसडीजी इंडिया इंडेक्स में महिला और लड़कियों से को सशक्त बनाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण मुद्दे के रूप में ध्यान आकर्षित किया है। ''कुमार एवं अन्य (2016) ने केरल के प्रदर्शन पर प्रकाश डाला, केरल की कुल साक्षरता 93.91 फीसदी का वाला देते हुए पुरुष और महिला साक्षरता दर क्रमशः 96.11 फीसदी और 92.02 फीसदी है। अपने अध्ययन में उन्होंने बताया है कि हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, बिहार जैसे राज्य में साक्षरता में सुधार करने की अभी भी बहुत गुंजाइश है खासकर महिलाओं के बीच।''[८]

आर्थिक कारण जैसे संसाधनों की कमी, स्कूल एवं कॉलेज से दूरी, लड़कियों के लिए स्कूलों में सुविधाओं की कमी, महिला शिक्षकों की कमी, स्कूल के अंदर और बाहर सुरक्षा की कमी, पाठ्यक्रम का प्रासंगिक और लचीला ना होना, पाठ्यक्रम में लैंगिक रूढ़िवादिता, कक्षा में लैंगिक रूप से अनुकूल माहौल न होना, कम उम्र में शादी और पारिवारिक जिम्मेदारियां होना, महिला रोल मॉडल का अभाव, सामाजिक ढांचे के बिगड़ने का डर जैसे कारक महिला शिक्षा को प्रभावित करते हैं।'' कौशिक बसु

(2004) द्वारा बीबीसी समाचार रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि 188 सरकारी प्राथमिक स्कूलों के एक अध्ययन में पाया गया की 59 फीसदी स्कूलों में पीने का पानी नहीं था 89 फीसदी स्कूल में शौचालय नहीं थे।''[६]

भावी संभावनाएं –वर्तमान में महिलाएं न केवल पारंपरिक पाठ्यक्रम में बल्कि तकनीकी एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में भाग ले रही हैं। अध्ययन करने के लिए शैक्षिक और प्रशिक्षण सुविधाओं की कमी और महिलाओं के लिए घरेलू जिम्मेदारियां उन्हें पीछे धकेलते हैं।भविष्य में महिलाओं की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नए क्षेत्रों का दायरा बनाना आवश्यक है विश्वविद्यालय और कॉलेजों को डिग्री पाठ्यक्रमों के साथ–साथ कौशल विकास के कार्यक्रमों तक पहुंच में प्रदान करनी चाहिए। महिलाओं के बेहतर भविष्य के लिए कई नीतियां कार्यक्रम हैं। उभरते वैश्विक परिवेश में, महिलाओं को तेजी से बदलते परिवेश में अधिक कुशल दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता है। उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी को और बढ़ाने के लिए सामानता, गुणवत्ता, प्रासंगिकता और पहुंच जैसे प्रासंगिक मुद्दों पर ध्यान देना समय की मांग है। भारत सरकार ने लैंगिक समानता और महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लक्ष्य के साथ नीतियां और प्रक्रियाएं शुरू की हैं।

भारत में, सामाजिक और बाजार की मांग के अनुसार महिला कालेजों में महिला कॉलेजों में कैरियर मार्गदर्शन और परामर्श पाठ्यक्रम की आवश्यकता है। पाठ्यक्रम में कंप्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स, सूचना प्रौद्योगिकी, गृह विज्ञान, कानून और शासन जैसे पाठ्यक्रम शामिल किए जाने चाहिए।

विश्वविद्यालय सशक्तिकरण का अभिकरण– उच्च शिक्षा के माध्यम से सशक्तिकरण से प्रभावित बनने के लिए विश्वविद्यालय को अपनी भूमिका निम्न प्रकार निभानी होगी–

1–जन प्रेरणा और जागरूकता कार्यक्रमों का प्रचार करना चाहिए।
2–समाचार पत्र पत्रिकाओं और अन्य सामाजिक एजेंसियों के माध्यम से सूचना का प्रसार
3–साक्षरता संवर्धन अभियान, प्रशिक्षण एवं शिक्षण सामग्री का विकास।
4–बालिकाओं की शिक्षा एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग के संबंध में डाटा आधारित सूचना तैयार करना एवं उसका रखरखाव करना।
5–मजबूत नेटवर्क संस्कृति, महिला अध्ययन और महिला आंदोलनों से संबंधित गतिविधियों की निगरानी करना तथा बेहतर कार्यान्वयन की सिफारिश करना
6–महिलाएं और अनुसंधान–विश्वविद्यालय अनुदान समिति ने हर साल 100 लड़कियों को अंशकालिक अनुसंधान सहयोगी पद प्रदान करने पर सहमति व्यक्त की है।

निष्कर्ष –उच्च शिक्षा असमानताओं में कमी आती है और परिवार एवं समाज में उनकी स्थिति को बेहतर बनाने में मदद करती है। महिलाओं का सशक्तिकरण शिक्षा के स्तर से दृढ़ता से जुड़ा हुआ है, यानी शिक्षा का स्तर जितना ऊंचा होगा महिलाओं का सशक्तिकरण उतना ही अधिक होगा। वर्तमान में महिलाएं न केवल पारंपरिक पाठ्यक्रम में बल्कि पुरुषों के क्षेत्र में विभिन्न क्षेत्रों में भी भाग ले रही हैं। लेकिन शैक्षिक और प्रशिक्षण सुविधाओं की कमी और महिलाओं की पारंपरिक भूमिकाएं उन्हें पीछे छोड़ती हैं। इसीलिए उच्च शिक्षा में अनुसंधान और रोजगार में महिलाओं के विकास में मदद करने के लिए तकनीकी, प्रौद्योगिकी, विज्ञान एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम शामिल होना चाहिए। भविष्य में

महिलाओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए नए क्षेत्र खोलना आवश्यक है। इसके अलावा महिला सशक्तिकरण और उच्च शिक्षा के संबंध में भारत सरकार की नीतियों और विभिन्न कार्यक्रमों का उचित क्रियान्वयन होना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. https://www.census2011.co.in/literacy.php
2. Nand kumar Laxman Kadam (2014): Wamayug www.wamayug.com 1 Women inHigher Education: Position and rospects.
3. https://en.m.wikipedia.org/wiki/List_of_universities_in_India
4. Gautam,G.P. Mahila Sashaktikaran avn Vaishvikaran Kala Prakashan B.33/33-A-1 New Shaket Colony Varanasi -5, pp. 38
5. K,Nila.(2025) THE ROLE OF HIGHER EDUCATION IN WOMEN'S EMPOWERMENT: A REVIEW OF LITERATURE.Journal of Informatics Education and Research. 5 (1).10.52783/jier.v5i1.2358
6. https://www.aishe.gov.in/
7. Panchani, M. (2017). Role of Higher Education in Women Empowerment. *Review Journal of Philosophy and Social Science.* 42(1)
8. Kumar, N., Kumar, N.& Rani, R. (2016). Gender Disparity in Literacy: District Level Evidence from Selected States of India. *An International Journal of education and applied social science 7*(3)

Basu, K. (2004) : Combating India's Truant Teachers. BBC news report. http://news.bbc.co.uk/2/hi/south_asia/ 4051353.stm.